॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

नवम्बर 2018 वर्ष 21, अंक 11
विक्रमी सम्वत् 2075
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 8

श्रद्धया विन्दते वसु

❒ महात्मा चैतन्यस्वामी

श्रद्धा, विश्वास और प्रेम ये सफलता की तीन सीढ़ियाँ हैं। श्रद्धा सफलता का प्रथम सूत्र है। जितनी अधिक जिस कार्य के प्रति श्रद्धा होगी, उतनी ही सफलता मिलेगी। ऋग्वेद में कहा है- **श्रद्धया विन्दते वसु** अर्थात् श्रद्धा से ही व्यक्ति सब वसुओं अर्थात् सब वस्तुओं व धनों को प्राप्त करता है..... **देवाः श्रद्धा उपासते**- देव-वृत्ति के लोग श्रद्धा की उपासना करते हैं। वस्तुतः श्रद्धा के कारण ही वे देव बन जाते हैं। श्रद्धा के सम्बंध में अन्यत्र कहा गया है कि यज्ञशील पुरूष श्रद्धा की उपासना करते हैं वस्तुतः श्रद्धा के कारण ही वे यज्ञशील बनते हैं, प्राणायाम के अभ्यासी श्रद्धा की उपासना करते हैं, वस्तुतः श्रद्धा के कारण ही वे योगी बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं.... डावांडोल नहीं होते, श्रद्धा से ही हृदय में दृढ़संकल्प की भावना बनती है, वस्तुतः श्रद्धा के कारण ही व्यक्ति दृढ़संकल्पी बन पाता है, श्रद्धा से ही अग्नि प्रदीप्त की जाती है और श्रद्धा से ही आहुति दी जाती है। ज्ञान, कीर्ति श्री आदि ऐश्वर्यों की शिरोमणि-भूत श्रद्धा को हम स्व-वचन से सबको प्राप्त कराते हैं। महाभारत में कहा गया है कि श्रद्धा न रखना परम पाप है जबकि श्रद्धा अनेक पापों से मुक्त कराने वाली है। श्रद्धालु मनुष्य वैसे ही पाप को त्याग देते हैं जैसे साँप पुरानी कैंचुली को त्याग देता है....यजुर्वेद में आया है कि परमात्मा ने सत्य व असत्य दोनों के रुपों को देखकर सत्य और असत्य को अलग अलग छांट दिया। झूठ में अश्रद्धा को रखा और सत्य में श्रद्धा को रखा।

व्यक्ति के मन में दो प्रकार के भाव उठते हैं, एक को श्रद्धा कहते हैं और दूसरे को अश्रद्धा। 'श्रत्' का अर्थ है सत्य, 'ध' का अर्थ है धारण करना। असत्य धारणा से रस्सी को साँप समझकर व्यक्ति डरेगा मगर जब सत्य से परिचय होगा तो वह निर्भर हो जायेगा। इसलिए स्वाभाविक रुप से ही व्यक्ति सत्य में ही श्रद्धा करता है असत्य में नहीं। मगर अज्ञान-दोष के कारण व्यक्ति वास्तविक श्रद्धा से वंचित रह जाता है। वैशेषिक दर्शन में कहा गया कि ज्ञानेन्द्रियों व अन्तःकरण के दोष से अविद्या उत्पन्न होती है। इस अविद्या के कारण ही हमारी सत्य के प्रति श्रद्धा नहीं हो पाती है....आँख में खराबी होगी तो व्यक्ति म को भ तथा अग्ने को अग्रे पढ़ लेगा....वास्तव में साधारण व्यक्ति श्रद्धा, अश्रद्धा और अन्धश्रद्धा में भेद नही कर पाता है। इसके लिए मुख्यतः दो कसौटियाँ दी गई हैं-दृष्टवा और व्याकरोत्। दृष्टवा से भाव है कि हम उसे ही सत्य माने जो दर्शनों में विवेचित प्रमाणादि से सही सिद्ध होता है औ व्याकरोत् से भाव है व्याकरण की कसौटी पर परखना। व्याकरण का अर्थ है सत्य को झूठ से अलग कर देना। जो उपरोक्त कसौटियों पर खरा उतरता है वह सत्य है और उसके प्रति ही श्रद्धा होनी चाहिए। जो इन कसौटियों के विपरीत है वह असत्य है और उसके प्रति अश्रद्धा होनी चाहिए। अब रही अन्ध-श्रद्धा। यह अन्ध श्रद्धा क्या है? जिसे न ज्ञान है और न व्याकरण की कसौटी पर परखने की कला है वह अन्ध श्रद्धा का शिकार हो जाता है। इस प्रकार जितनी भी अवैदिक मान्यताएँ हैं, वे सब मत, मजहब, सम्प्रदाय तथा गुरुडक प्रथा ये सभी अन्ध श्रद्धा के ही अन्तर्गत आते हैं। किए हुए पाप कर्मों का क्षमा हो जाना, किसी जड़ वस्तु के आगे सिर झुकाना, भूत-प्रेत, डाकिनी-शकिनी, पीर-पैगम्बर आदि के भुलावे भी इसी के अन्तर्गत आते हैं क्योंकि से सब उपरोक्त कसौटियों में कहीं भी टिक नहीं पाते मगर फिर भी अज्ञानी, अज्ञानियों को लूट रहे हैं तथा लोग अन्ध श्रद्धा में भटक कर अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर रहे हैं.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बहुत सुन्दर एक वाक्य संसार के लोगों को दिया -'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' उद्यत रहने का अर्थ है कि वेद व दर्शनादि आर्ष ग्रन्थों में सत्य और असत्य की परख करने के लिए जो कसौटियाँ दी हैं, उन पर मनन और चिन्तन करके जो सत्य है उसे ग्रहण करना और जो असत्य है उसे छोड़ देना चाहिए। इसी में मानव मात्र का कल्याण है। जब उपरोक्त कसौटियों पर परखा जायेगा तो आजकल जो भी पाखण्ड और आडम्बर फैल रहे हैं वे स्वतः ही ध्वस्त हो जायेंगे। बल्कि जो व्यक्ति उपरोक्त कसौटी के अनुसार चिन्तन करेगा, उसे स्वाभाविक रुप से ही इन सब पाखण्डों के प्रति अरुचि हो जायेगी तथा सत्य के प्रति ही रुचि बनेगी क्योंकि आत्मा सत्य ही चाहता है असत्य नहीं..... मगर व्यक्ति को अपने किसी ने किसी अज्ञान, लाभ व लोभ के कारण

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

यज्ञ का संदेश

हमारे भारत देश की यह गौरवशाली परम्परा रही है कि यहां आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व घर-घर में प्रतिदिन हवन होता था, राजे महाराजे व धनाड्य लोग शुभ अवसरों एवं पर्वों पर बड़े बड़े यज्ञ करते व करवाते थे, जिसके कारण हमारा देश सब प्रकार की आपदाओं, रोगों व कष्टों से मुक्त था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम प्रतिदिन यज्ञ करते थे, माता सीता वाल्मीकि आश्रम में प्रतिदिन यज्ञ करती थीं, योगीराज श्रीकृष्ण प्रतिदिन यज्ञ करते थे, राजा जनक बड़े-बड़े यज्ञ कराया करते थे। इसी कारण वे आर्य कहलाया करते थे और हमारे देश का नाम आर्यावर्त था। यज्ञ, योग, गायत्री व गौसेवा प्रत्येक व्यक्ति व राष्ट्र की सुख समृद्धि के लिए अत्यन्त आवश्यक अंग है। आज ये सभी अंग लुप्त प्राय हो चुके हैं। यज्ञ का स्थान धूप, अगरबत्तती ने लिया है। गायत्री का स्थान अन्य काल्पनिक मन्त्रों ने ले लिया है, गौ का स्थान भैंसो ने ले लिया है। जब तक ये चारों अंग पुनः प्रतिष्ठित नहीं होंगे विश्व में एकता, प्रेम, स्वास्थ्य व सद्भावना की स्थापना होनी संभव है।

उद्योगों, वाहनों, परमाणु-परीक्षणों, आतिशबाजी एवं मल-मूत्र आदि के त्याग से हम अपने वायुमण्डल को विषैला करते रहते हैं। विश्व के सामने पर्यावरण प्रदूषण एक भयंकर समस्या बन कर रह गयी है। बीमारियां दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। हम कितने भी अस्पतालों व सुख साधनों को जुटा लें परन्तु यदि नाना प्रकार की जहरीली गैसों से युक्त वायु में हम सांस लेते हैं तो सब व्यर्थ है। इसका एक मात्र समाधान यज्ञ ही है। न्यूयार्क, पोलैंड, जर्मनी में इस पर अनुसंधान हो रहा है। यज्ञ से परिवार में, समाज में मेल-मिलाप बढ़ता है, यज्ञ की अग्नि हमें उर्ध्वगमन, ज्ञान का प्रकाश फैलाने व अपने दोषों का नाश करने की प्रेरणा देती है, यज्ञ से परमात्मा की अमर वाणी वेद मन्त्रों की रक्षा होती है। थोड़ा समय लगाकर प्रतिदिन एक महान पुण्य कार्य हम से हो जाता है। यज्ञ से योग में गति होती है, समय पर वर्षा होती है, अन्न, फल, सब्जियों आदि की पौष्टिकता में वृद्धि होती है। घर के चारों ओर एक सुरक्षा कवच बन जाता है। यज्ञ की सामग्री में शक्कर, मुनक्का, गुग्गल, गिलोय, चन्दन-बूरा, इलायची, अजवायन, शहद आदि मिलाने से प्लेग, टी.बी., टाइफाइड, मलेरिया, डेंगू, दमा व हृदय आदि रोगों का नाश होता है। फ्रांस के डाक्टर हेफकीन का कथन है कि यज्ञ में घी डालने से चेचक व टायफायड के कीटाणु कुछ ही मिनटों में मर जाते हैं। जबलपुर के डॉ. एफ.एम. अग्निहोत्री ने विशेष प्रकार की सामग्री व घी से हवन द्वारा टी.बी. के अनेक रोगियों का उपचार किया। मध्य प्रदेश सरकार व भारत सरकार ने उन्हें इस खोज पूर्ण कार्य के लिए सम्मानित किया। यज्ञ करने से एसीटिलीन, फज़रमैल्डीहाइड आदि गैंसे बनती हैं जो जहरीली गैंसों को छिन्न-भिन्न कर शुद्ध वायु में परिवर्तित कर देती हैं। जैसे पीने वाले पानी स्त्रोतों, तालाबों, कुओं आदि में विष मिलाना पाप है, वैसे ही सांस लेने वाली वायु में वाहनों व मलमूत्र आदि से विष मिलाना महापाप है। यज्ञ करने से हम इस पाप से बचते हैं। श्रद्धापूर्वक यज्ञ करने से शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा चारों पवित्र होते हैं। ऐसा पवित्र व्यक्ति कभी भ्रष्टाचार व राष्ट्रद्रोह में लिप्त नहीं हो सकता। यज्ञ की राख चमड़ी के रोगों का उपचार करने व खाद के रूप में काम आती है। यज्ञ करना न कठिन है साम्प्रदायिक है।

यह सरासर गलत धारणा है कि यज्ञ में घी डालना घी को नष्ट करना है। जो लोग ऐसा सोचते हैं वे वास्तव में पदार्थ विद्या को नहीं जानते। पदार्थ का सर्वथा नाश कभी नहीं होता उसका केवल रूपान्तरण होता है। यज्ञ की अग्नि घी व जड़ी बूटियों से युक्त सामग्री को सूक्ष्म रूप देकर लाखों लोगों तक उसका लाभ पहुंचा देती है। यज्ञ के नाम पर पशुबलि देना अपराध है। ऋग्वेद में भगवान ने कहा है कि यज्ञ करने वाले महिमाशाली स्थान को प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंन्त्र-अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवं ऋत्विजम् होतारम् रत्नधातमम्-में अग्नि व यज्ञ का ही वर्णन है। यजुर्वेद में आया है-यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्म, यज्ञौ वै विष्णु-अर्थात् सब कर्मो से श्रेष्ठ कर्म है, यज्ञ करने से मनुष्य का यश चहुं ओर फैलता है। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि यज्ञ न करने वाला पापी है और दण्ड पात्र है। अंग्रेजी का 'हैवन' शबद हवन का ही अपभ्रंश है। मनु महाराज ने उपदेश किया है कि-अन्तकाल आने पर धन भूमि पर, पशु वाड़े पर, पत्नी द्वार तक, मित्र शमशान घाट तक, शरीर चिता तक साथ देता है परन्तु यज्ञादिशुभ कर्म मृत्यु के बाद भी साथ देते हैं।

आओ हम सब मिलकर संकल्प करें कि-हम प्रतिदिन, अपने-अपने घरों में गायत्री आदि मंन्त्रों से यज्ञ किया करेंगे। जन्मदिन, वर्षगांठ, नवसंवत्सर, होली, दशहरा, दिवाली आदि पर्वों पर बड़े-बड़े यज्ञ किया और करवाया करेंगे। पटाखों, आतिशबाजी व मोमबत्तियों से हवा में जहर नहीं मिलायेंगे। यज्ञ व घी के दियों से वायु में सुगन्ध फैलायेंगे। राष्ट्र में सिर उठा रही आसुरी शक्तियों, अन्धविश्वासों व पाखंडों को जलाकर राख कर देंगे, स्वाहा कर देंगे। ईश्वर करे हर नगर, सैक्टर व गांव में यज्ञशाला व गौशाला हो और परमेश्वर हमें बड़े-बड़े यज्ञों के लिए प्रेरित करता रहे।

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

समाचार दर्पण

अभिनन्दन कार्यक्रम सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, भट्टी गेट, झज्जर में वैदिक यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन कार्यक्रम हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एच.एस.यादव (झज्जर), मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता आर्य नेता आचार्य यशवीर जी बोहर (रोहतक) एवं मुख्य यजमान श्रीमती मामकोर एवं श्री रती राम आर्य रहे। लगभग 75 छात्र-छात्राओं ने हाथों के सूक्ष्म व्यायाम का प्रदर्शन किया। डॉ. एच.एस.यादव ने बताया कि सब बुराईयों का मूल कारण अज्ञानता (असत्यता) के साथ-साथ पर्यावरण के मूल तत्त्व वायु जल आदि का विषैला होना है। आचार्य यशवीर आर्य ने अपने वक्तव्य में कहा जिन आर्य परिवारों में प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ एवं अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय होता है, वही परिवार सच्चे अर्थों में आर्य समाज रूपी माँ की उन्नति में सहायक बनते हैं।

67वॉ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मालवीयनगर, नई दिल्ली के तत्त्वावधान आर्य समाज का 67वॉ वार्षिकोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ श्री अरक्षित शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ और सायंकालीन सत्र में संगीतमयी वैदिक रामायण की प्रस्तुति श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) ने की। आर्य महिला सम्मेलन की मुख्य अतिथि डॉ. नन्दिनी शर्मा (निगम पार्षद) एवं स्वागताध्यक्ष श्रीमती निर्मल पाल थीं। मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री, श्री रविदेव गुप्ता आदि विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन हुए, जिनका पधारे हुए आर्य जनों ने धर्म लाभ उठाया।

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मु में आश्रम के मुख्य संचालक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माता सत्यप्रियायति के सान्निध्य में नि:शुल्क योग-ध्यान, साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए गए तथा योगदर्शन का पठनपाठन भी कराया गया। शिविर में रोजड़ के आचार्य आत्मन जी विशेष रूप से पधारे। आचार्य जी ने शिविरार्थियों की शंकाओं का समाधान कुशलतापूर्वक किया। इस वर्ष शिविर में हरिद्वार से स्वामी नित्यानन्द आदि अन्य अनेक विद्वान भी पधारे। कार्यक्रम में माता सत्यप्रियायति तथा अन्य शिविरार्थियों के भजन भी होते रहे तथा पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी के आध्यात्मिक प्रवचनों का शिविरार्थियों पर विशेष प्रभाव पढ़ा। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी के ब्रह्मत्व में सामवेद यज्ञ का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर सहारनपुर से पधारे श्री राजपाल सिंह ने महात्मा जी से संन्यास की दीक्षा ली और उनका नाम स्वामी अभयानन्द रखा गया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज सैक्टर-22 ए, चण्डीगढ़

प्रधान- श्री अनिल कुमार गुप्ता **मन्त्री**- भूपेन्द्र कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष- डॉ. शिवकुमार आर्य

धैर्य कड़वा है लेकिन उसका फल बहुत मीठा है

वैदिक प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

आर्य समाज राजगढ़, अलवर के तत्त्वावधाान में पं. नारायण सहाय दीक्षित चैरीटेबल ट्रस्ट की ओर से पं. नारायण सहाय दीक्षित के 103वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में राज. उ. प्रा. विद्यालय, इमाम चौक में वैदिक प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री संत ज्ञानेश्वर शर्मा, विशिष्ट अतिथि श्री प्रदीप शर्मा के रूप में उपस्थित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री खेमसिह आर्य ने की। मंचासीन अतिथियों द्वारा उनके जीवन के संदर्भ में विस्तार से प्रकाश डाला गया। सभी ने उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए युवापीढ़ी को उनके बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। इस अवसर पर 80 वर्ष से अधिक के आर्य भद्र पुरूषों में से श्री गोपाल सिंह आत्रेय को तथा आर्य समाज के कार्यक्रम में सर्वाधिक उपस्थिति के लिए श्रीमती जमुनादेवी आर्या को शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री वितरित की गई।

अमृत महोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

क्षत्रियों के गौरव, आर्यों के भामाशाह आर्य रत्न नेता श्री ठाकुर विक्रम सिंह द्वारा अपनी जीवन के महत्त्वपूर्ण 75 वर्ष पूरे होने पर अमृत महोत्सव का आयोजन इण्डिया इन्टरनेशनल, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने की। मंच का संचालन डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी द्वारा किया गया। देश के विभिन्न प्रान्तो से आए आर्य जगत् के बड़े बड़े ख्याति प्राप्त संन्यासी, विद्वान, धर्माचार्य, आचार्य/आचार्या, भजनोपदेशक/उपदेशिका आदि को आर्यन परिवार द्वारा आयोजित अमृत महोत्सव में सम्मिलित होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस समारोह में देश के विभिन्न स्थानों से आए करीब 75 सम्मानित द्वारा गणमान्यों को भेंट स्वरूप एक एक शॉल, बिस्कुट, किताबें और चैक द्वारा राशि दक्षिणास्वरूप देकर सम्मानित किया गया। ठाकुर विक्रम सिंह द्वारा अपना अमूल्य जीवन आर्य समाज की सेवा में समर्पित कर वैदिक धर्म, मानवता और राष्ट्र की महती सेवा में लगाने के संकल्प को अद्वितीय संकल्प मानते हुए विभिन्न प्रान्तों से आए महानुभावों ने आर्य समाज में आर्यन परिवार की ओर से आयोजित ठाकुर विक्रम सिंह जी के जीवन के 75 वर्ष पूरे होने पर जन्मदिन के रूप में आयोजित अमृत महोत्सव को युगों युगों तक याद रहने वाला कार्यक्रम बताया।

नवम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

गुरूकुल हरिपुर, जुनानी, जिला नुआपाड़ा के तत्त्वावधान में श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर गुरूकुल के संचालक पूज्य डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में तथा श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में नवम् चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ हुआ तथा गुरूकुल में अध्ययनरत 27 ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार गुरूकुलीय ब्रह्मचारियों के द्वारा ''ईश्वर एक नाम अनेक'', ''चोटी यज्ञोपवीत की महत्ता'' से सम्बन्धित नाटिका तथा ''राजा भोज के साथ जुलाहा एवं लकड़हाड़ा'' के संवाद का संस्कृत नाटिका का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर पूज्य आचार्य जी ने संस्कारों की महत्ता बताते हुए जीवन में यज्ञोपवीत की उपयोगिता पर सारगर्भित प्रवचन दिया।

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

गौ-दान : महा-दान

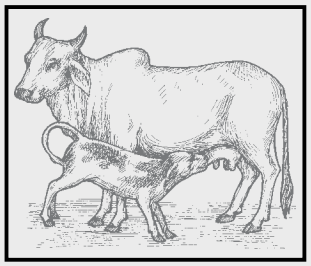

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा बोधोत्सव 2019

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष 2019 में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रे के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, मंगलवार 03, 04, 05 मार्च 2019 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथिया अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। व्यवस्था करने हेतु अपने आने से पूर्व लिखित सूचना अवश्यक देवे, कितने ऋषिभक्त आ रहे है संख्या सहित सूचित करें।

- रामनाथ सहगल, मन्त्री

ओ३म्

धर्मकोट रंधावा गुरदासपुर के आर्य जगत् के समाज सेवक व सुधारक **श्री ज्वालेशाह जी** के पड़-पड़ पौत्र

अभय रक्षपाल अबरोल द्वारा भारत में ही विनिर्मित व संचालित और निर्यात योग्य

ABROL INDUSTRIES

34, Supreme Estate Lucky Compound, Sagpada, Bhiwandi Kaman Marg,
Vasai (East), Palghar-401208, Maharashtra (India)
Mob.: 9820203154, 9833554938, 9833761938, Email:info@abrolins.com

(पृष्ठ 1 का शेष)

असत्य में श्रद्धा कर बैठता है यही अन्ध श्रद्धा है। सभी प्रकार के पाखण्डादि जब इन्हें ज्ञान और व्याकरण की कसौटी पर परखोंगे तो वे धराशाई हो जायेंगे इसलिए स्वार्थी लोग सत्य ज्ञान और व्याकरण से ही डरने लगते हैं क्योंकि उनकी वे धारणाएँ ही ध्वस्त होने लगती हैं जिनके आधार पर पाखण्ड का आश्रय लेकर वे अपनी स्वार्थ सिद्धि करते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी को ठग रहा होता है तो वास्तव में उसे तो पता होता है कि मैं असत्य बोल रहा हूं मगर वह दूसरों को उस ज्ञान से वंचित रखकर ठगता रहता है।

गीता के सोलहवें अध्याय में श्रीकृष्ण जी ने (16-24) कहा कि जब व्यक्ति के सामने यह स्थिति पैदा हो जाए कि हम क्या मानें और क्या न मानें तो उसके लिए -**तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं (तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते)** अर्थात् वहाँ पर शास्त्र ही प्रमाण हैं। महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि वेद और वेदानुकूल स्मृतियाँ ही प्रमाण है। मनु महाराज ने भी कहा है कि **'वेदोऽखिलं धर्ममूलम्' तथा 'धर्म जिज्ञासानानाम् प्रमाणं परमंश्रुतिः'** इसलिए वे कहते हैं-**'नास्तिको वेदनिन्दकः।'** फिर उन्होंने धर्म के चार मूल स्रोत बताए हैं-**वेदःस्मृति सदाचारः स्वयस्य व प्रियामात्मनः।'** 1.वेद 2. वेदाध्ययन करने वाले पारंगत विद्वानों द्वारा रची गई वेदानुकूल स्मृतियाँ एवं शील (वेद विरूद्ध स्मृतियॉ व शील नहीं) 3.सदाचार अर्थात् उन वेदानुकूल स्मृतियों को रचने वाले आप्त लोगों का वेदानुकूल आचरण 4. जो आत्मा को प्रिय है अर्थात् जिस कार्य में आत्मा को भय, शंका और लज्जा का अनुभव न हो बल्कि उत्साह, उमंग और प्रसन्नता के भाव पैदा हों, वे ही कार्य करने चाहिए। उपरोक्त पूरे विवेचन से श्रद्धा, अश्रद्धा और अन्धा श्रद्धा के भाव पूर्णरुप से स्पष्ट हो जाते हैं। अन्ध श्रद्धा का पूरी तरह से त्याग करना चाहिए। अन्यथा व्यक्ति का जीवन अकार्थ ही चला जाता है। सत्य के प्रति श्रद्धा करनी चाहिए, मगर यहाँ पर हम अश्रद्धा के महत्त्व के बारे में भी थोड़ा सा चिन्तन करते चलें।

महाभारत का एक श्लोक का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व्यवहारभानु में लिखते हैं-'श्रद्धा' है- परमात्मा, सत्यविद्या और धर्म के प्रति दृढ़ विश्वासी होना। ऋ. भाष्य भूमिका वेदोक्त धर्म विषय प्रकरण में मन शब्द की व्याख्या करते हुए.....शतपथ ग्रन्थ के काम: संकल्पो...14-4 वाक्य प्रमाण देकर श्रद्धा के साथ-साथ अश्रद्धा का भी उल्लेख किया गया है..... श्रद्धा की तरह अश्रद्धा का भी सकारात्मक पहलू हमारे हमारे ध्यान में आता है। उसके अनुसार श्रद्धा- जो ईश्वर और सत्य-धर्म आदि शुभ कर्मों में निश्चय से विश्वास को स्थिर रखना है, उसको श्रद्धा जानना और अश्रद्धा- अविद्या, कुतर्क, बुरे काम करने, ईश्वर को न मानना और अन्याय आदि अशुभ गुणों से सब प्रकार से अलग रहने का नाम अश्रद्धा है।

महर्षि पतंजलि जी ने भी वितर्कबाधने प्रतिपक्षभावनम् सूत्र के माध्यम से प्रकट किया है-जो अनिन्दनीय है, अनादर्श है, योग में बाधक है, उनके प्रति अप्रीति अर्थात् अश्रद्धा का भाव होना प्रतिपक्ष भावना है। भावार्थ के रुप में हम इसे इस प्रकार समझ सकते हैं कि हम यदि भद्र चाहते हैं जो भद्र के प्रति श्रद्धा बननी चाहिए और अभद्र छोड़ना चाहते हैं तो अभद्र के प्रति हमारी अश्रद्धा का होना अनिवार्य है। जहाँ अभद्र के प्रति अश्रद्धा होगी वहाँ भद्र तो आयेगा ही। मगर यदि हम अभद्र को नहीं छोडेंगे, उसके प्रति श्रद्धा बनाए रखेंगे तो भद्र का प्रवेश कैसे हो पायेगा। इसलिए उपनिषदों में श्रद्धा को कल्याणी मगर अश्रद्धा को अति कल्याणी कहा है।

महर्षि दयानन्द धाम, महादेव सुन्दनगर, हि.प्र.-175018, मो. 09418053092

जन्म दिवस पर विशेष

महादानवीर-ठाकुर विक्रम सिंह आर्य

❐ पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

जो मानव संसार में, करते अच्छे काम।
वे कर जाते हैं अमर, जग में अपना नाम।।
जग में अपना नाम, धन है उनका जीवन।
गाते हैं यश गान, प्रेम से उनके सज्जन।।
राम, कृष्ण, दयानन्द, निराले थे तपधारी।
सच्चे ईश्वर भक्त, गुणी, त्यागी, उपकारी।।1।।

ठाकुर विक्रम सिंह है, ईश्वर भक्त महान!
देश भक्त धर्मात्मा, मानवता की शान।।
मानवता की शान, वीर योद्धा नर बंका।
करता अच्छे काम, बजा है जगमें डंका।।
सकल गुणो की खान, वेद मर्यादा पालक।
आर्य वीर महान, सत्यत्ता का संचालक।।2।।

वेद प्रचारक है बड़ा विक्रम सिंह गुणवान।
शास्त्रार्थ महारथी, दानी वीर महान्।।
दानीवीर महान, स्पष्टवादी है नेता।
साहस बल की खान, गजब का है प्रचेता।।
पाखण्डियों की पोल, खोल पल में देता है।
परहित में सब कष्ट, झेल विक्रम लेता है।।3।।

करता है हरवर्ष जो, वीर करोड़ों दान।
विद्वानों का हर तरह करता है सम्मान।।
करता है सम्मान, धर्म पालक है ज्ञानी।
भामाशाह सा सेठ, निराला विक्रम दानी।।
आर्य जगत में नहीं, एक भी ऐसा नेता।
विद्वानों को मान, न कोई ऐसा देता।।4।।

विनती मेरी, अब सुनो, दयासिंधु भगवान।
विक्रम सिंह को कीजिए, दीर्घायु प्रदान।।
दीर्घायु प्रदान, काम यह जग के आए।
अबला दीन अनाथ, जनों की गले लगाए।।
वीर लालपत्त बने, देश की शान बढ़ाए।
''नन्दलाल'' कह, खौक नहीं, दुष्टों का खाए।।5।।

-आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष-9813845774

टंकारा चलो : आर्यावर्त केसरी के संयोजन में

अहमदाबाद, द्वारिकापुरीधाम, पोरबन्दर, सोमनाथ तथा दीप आदि सहित

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम 2019

कार्यालय - आर्योवर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा - 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान: 26 फरवरी 2019 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हजरत एक्सप्रेस 4311 द्वारा।
(25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मन्दिर, गंज स्टेशन, मुरादाबाद)

वापसी: 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5.45 बजे आला हजरत एक्सप्रेस से।

परिभ्रमण कार्यक्रम

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़** - साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरूकुल आर्यावन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम** - चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मन्दिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंट द्वारिका रूक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब आदि।
- **नागेश्वर महादेव** - द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर** - महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरूकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मन्दिर आदि।
- **भालका तीर्थ** - वह ऐतिहासिक स्थली , जहाँ योगेश्वर श्री कृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ तथा दीव** - ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साऊंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्म भूमि टंकारा** - महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्य समाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी-प्रबन्ध समिति द्वारा होगी। **इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि 4,500/-रूपये (सीनियर सिटीजन के लिए 4,000/-रूपये) देय होगी, जिसमें रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए 2,000/-रूपये की धनराशि दिनांक 10 अक्टुबर 2018 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड/ड्राफ्ट चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनरशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव ACIII व ACII में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए कुल धनराशि 5,700/-रूपये (सीनियर सिटीजन के लिए 5,200/-रूपये) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए 3,000/-रूपये की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा ''आर्यावर्त केसरी ''के भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनराशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें।** समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

आओ! ऋषि जनमभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं.....

-:सम्पर्क सूत्र:-

डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबाद गेट, अमरोहा, (उ.प्र.) 244221 (चलभाष: 9412139333, 8630822099)

जीवन सौन्दर्य से भरपूर है।
इसे देखें, महसूस करें, पूरी तरह से जीएं
और अपने सपनों की पूर्ति के लिए
पूरी कोशिश करें।

टंकारा समाचार नवम्बर 2018

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2018-20

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-11-2018

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.10.2018

दुनियाँ ने है माना
एम.डी.एच. मसालों का है जमाना

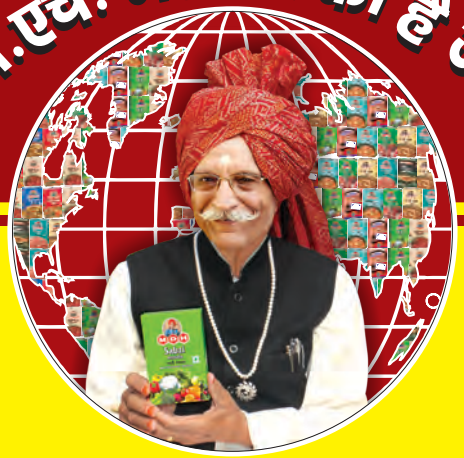

एम डी एच मसाले 100 से अधिक देशों को निर्यात किये जाते हैं।

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच

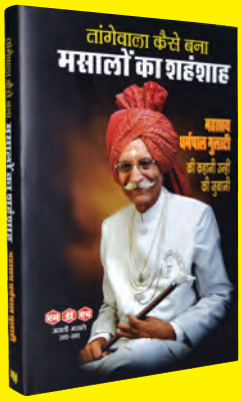

महाशय जी के जीवन की हकीकत जानिये, पढ़िये
"एक तांगा चलाने वाला कैसे बना मसालों का शहंशाह"

महाशय जी के जीवन को नई दिशा दिखाने वाले
"सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र" पढ़िये

मूल्य: ~~₹ 325/-~~ ₹ 150/- पृष्ठ: 240

मूल्य: ~~₹ 350/-~~ ₹ 200/- पृष्ठ: 168

पुस्तक मंगाने के लिए 9811745246 पर मैसेज/WhatsApp करें।
मेल भी कर सकते हैं mdhbook@gmail.com पर

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय